ROBINSONS
CARGO AND LOGISTICS
ON THE MOVE

विशेष की अलग, अलग साक्ष्य एवं अवधारणा हो सकती तथा इन शर्तों में संदिग्धता है परन्तु कुछ ज्ञान असंदिग्ध होते हैं जैसे जीवन और मृत्यु यानि जो जिन्दा है वह मरेगा ही, पृथ्वी सूर्य परिक्रमा करती है यह अकाट्य तथ्य है अतः यह सत्य है परन्तु 470 ई० पूर्व लोगों का मानना था कि पृथ्वी की परिक्रमा सूर्य करता है क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था।

Will Continue next class

ROBINSONS
CARGO AND LOGISTICS
ON THE MOVE

(II) ज्ञान की दूसरी शर्त है कि किसी प्रतिज्ञप्ति के सिर्फ सत्य होने से जानने की शर्त पूरी नहीं होती. संसार में अनेक तथ्य सत्य हैं परन्तु सब ही सत्यता को हम नहीं जान सकते हैं क्योंकि जानने के लिए अथाह ज्ञान पड़ा हुआ है यह सम्भव नहीं है हम सबको जान लें और ज्ञान के अन्तर्गत सम्मिलित करलें इसलिए ज्ञान होने की यह शर्त है कि हमें यह विश्वास भी हो कि अमुक प्रति-ज्ञप्ति जिसे हम सत्य कह रहे हैं उसमें हमें विश्वास भी होना आवश्यक है अगर हम किसी प्रतिज्ञप्ति का ज्ञान है तो उस पर दृढ़ विश्वास भी होना चाहिए कि यह सत्य ही है।

(III) अब हम ज्ञान की तीसरी शर्त को देखते हैं कि अगर हम किसी प्रतिज्ञप्ति की सत्यता जानते है और उसमें विश्वास भी करते हैं लेकिन विश्वास का प्रमाण चाहिए. आधार होना चाहिए कि यह प्रमाणित होना चाहिए लेकिन कुछ प्रतिज्ञा ज्ञान ऐसा भी है जिसको प्रमाणित करने पर

AIR IMPORTS & EXPORTS
OCEAN IMPORTS & EXPORTS
CONSOLIDATION SERVICES
CUSTOMS CLEARANCE
DRY & TEMP CONTROLLED WAREHOUSING
DRY & TEMP CONTROLLED TRANSPORTATION

डी०वी के अनुसार "केवल वही ज्ञान ही वास्तविक है जो हमारी प्रकृति में संगठित हो गया है जिससे हम पर्यावरण को अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने में समर्थ हो सके और अपने आदर्शों तथा इच्छाओं को उस परिस्थिति के अनुकूल बना लें जिसमें की हम रहते हैं।"

सुकरात के अनुसार "जो सच्चा ज्ञान प्राप्त कर लेता है वह सद्गुण सम्पन्न हो जाता है।" इन सभी परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि किसी वस्तु की वास्तविकता की जानकारी प्राप्त करलेना ही ज्ञान है परन्तु ज्ञान की कुछ शर्तें होती हैं जो निम्नलिखित हैं ये पारंपरिक रूप निम्नलिखित हैं।

1) सबसे पहली शर्त तो यह है कि ज्ञान किसी प्रतिज्ञप्ति की सत्यता को जानना है इसलिए अगर कोई कहता है कि वह अमुक बात जानता है तो क्या वह प्रतिज्ञप्ति वास्तव में सत्य हो। इसलिए पहली शर्त है कि जिस प्रतिज्ञप्ति को आप सत्य जानते हैं वह वास्तव में सत्य होनी चाहिए उसकी सत्यता में संदेह नहीं होनी चाहिए।

CARGO AND LOGISTICS
ON THE MOVE

Second year — BCC8 - Knowledge and curriculum

Topic :- Knowledge ज्ञान

ज्ञान शब्द का अर्थ होता है जानना या बोध करना, अनुभव करना। अर्थात किसी वस्तु का स्वरूप जैसा है वैसा ही अनुभव करना। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं किसी विषय वस्तु को पूर्ण रूप से समझना और समय आने पर उसका उचित प्रयोग करना ही ज्ञान है।

हमारा संपूर्ण ज्ञान अनुभवों से प्राप्त तथा अनुभवों पर ही आधारित है। विचार प्राप्त करने का मुख्य साधन है इन्द्रियानुभव जिसमें इन्द्रियों की सहायता से मन ज्ञान को ग्रहण करता है। आंतरिक इन्द्रियानुभव वह है जो स्वयं की क्रियाओं से विचारों को मस्तिष्क तक पहुँचाता है, जैसे ग्रहण करना, विचार करना, तर्क करना, विश्वास करना। समस्त ज्ञान याद करने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है अपितु तुलनात्मक ज्ञान है। ज्ञान के विषय में अनेक विद्वानों अपने अपने मत प्रकट किये हैं